2019-20

भारतीय साहित्य एवं कला में गौण एवं लोक देवी-देवता

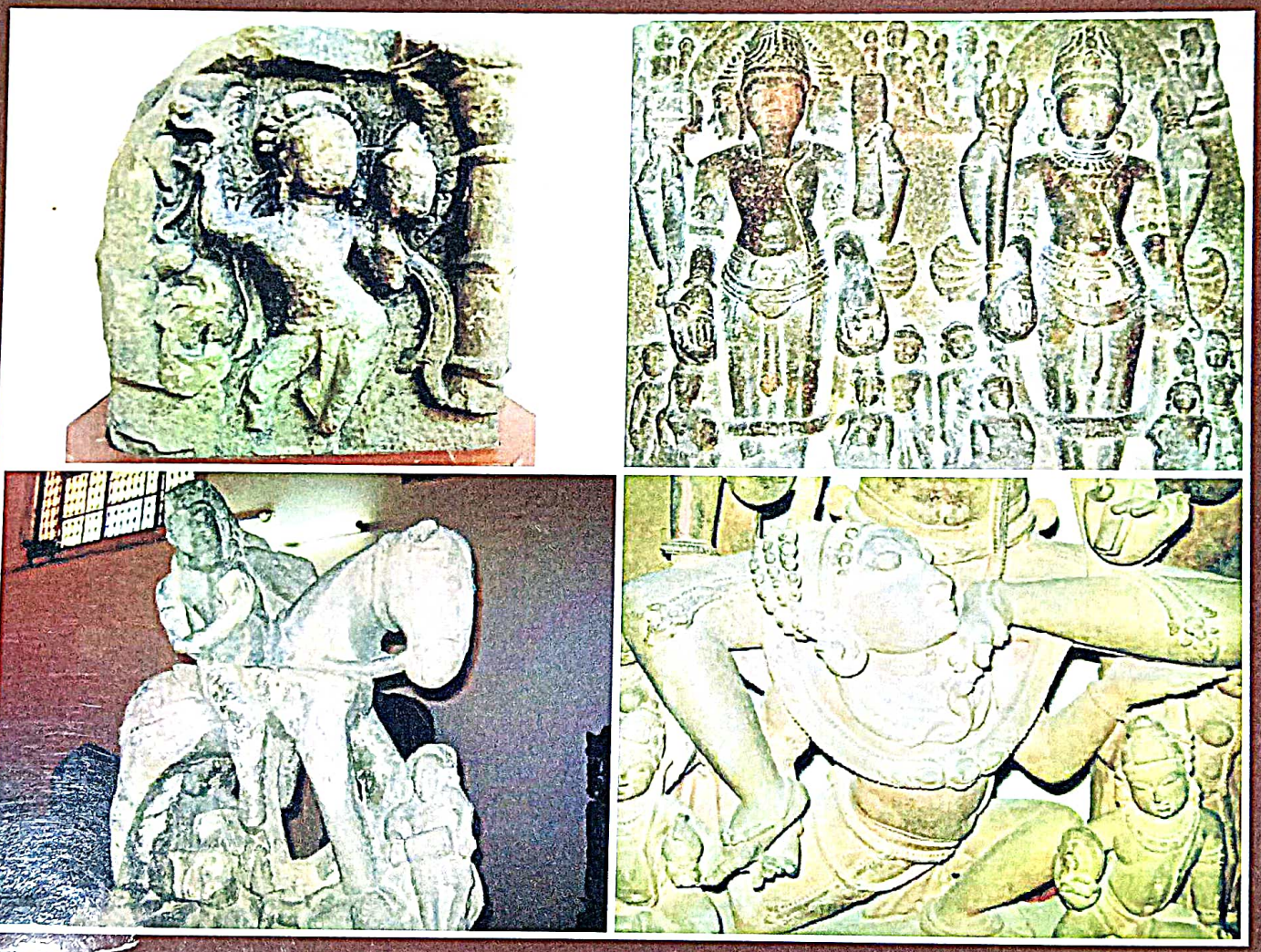

सम्पादक
रामकुमार अहिरवार

Set of 2 Vols.

47

जरूवाखेड़ा (सागर) के क्षेत्रीय लोक-देवता "ठाकुर बब्बा"

नवीन गिडियन

सागर और खुरई तहसील के मध्य जरूआखेड़ा नामक एक गाँव है यद्यपि श्री हीरालाल द्वारा रचित सागर सरोज नामक प्रथम हिन्दी गजेटियर में जरूआखेड़ा का कहीं कोई उल्लेख नहीं है ऐसा क्यों है यह कह सकना कठिन है, किंतु प्रचलित किवदन्तियों से भी सिद्ध होता है कि यह गाँव ब्रिटिश काल में भी विद्यमान था। इसकी उपेक्षा का कारण क्या है। यह तो विदित नहीं है, हो सकता है उस समय यह क्षेत्र नगण्य रूप में रहा हो और बाद में ब्रिटिश काल में जब यहाँ रेलवे लाइन डाली जा रही थी तब की जो चमत्कारिक घटनाऐं घटीं उसी ने इस क्षेत्र को एक महत्वपूर्ण स्थान का दर्जा दिला दिया।

क्षेत्र में जो किवदन्तियाँ प्रचलित हैं और बड़े बुजुर्ग इस संबंध में बताते हैं कि मुख्य सड़क मार्ग जो सागर को खुरई से जोड़ता है, यहाँ रेल्वे लाइन डाले जाने का काम चल रहा था। सड़क के ठीक किनारे ही एक छोटी सी मढ़िया थी उसी से सटाकर रेलवे लाइन बिछाई गई किंतु दूसरे दिन वह लाइन खिसकी हुई पाई जाती जब कई बार ऐसा हुआ तब अंत में रेलवे लाइन को कुछ आगे से डाला गया। लाइन शुरू करने में किसी न किसी प्रकार व्यवधान निरंतर आता ही रहा तब अंत में स्थानीय लोगों के परामर्श से अंग्रेजों ने ठाकुर बब्बा की इस प्रतिमा को वहाँ से उठाकर सड़क के दूसरे किनारे ससम्मान स्थापित किया। इस घटना की सत्यता क्या है यह किसी को ज्ञात नहीं है किंतु तभी से उस टीले पर स्थित ठाकुर बाबा की मढ़िया की प्रसिद्धि बढ़ती चली गई। दूर–दूर के क्षेत्रों तक इन स्थानीय देव की प्रसिद्धि इतनी बढ़ गई कि लोग अपनी विभिन्न मनौतियाँ मांगने यहाँ आते हैं। मनौतियाँ पूरी होने पर यहाँ धातु के (पीतल) छोटे बड़े घोड़े चढ़ाए जाते हैं। कुछ लोग जीवित मुर्गे भी चढ़ाते हैं जो उसी प्रांगण में घूमते रहते हैं। संभवतः ठाकुर बब्बा की सवारी घोड़ा होने के कारण ही धातु के घोड़े चढ़ाए जाने की परम्परा रही हो। सम्पूर्ण मंदिर परिसर

में अनेक छोटे–बड़े घोड़े देखे जा सकते हैं। ऊपर जाने के लिए जो सीढ़ियाँ बनी हुई हैं उनके किनारे स्थित दीवार पर भी नीचे से ऊपर तक छोटे–छोटे अश्व जड़े हुए हैं एवं सबसे नीचे पत्थर का एक विशाल अश्व स्थित है। जिस प्रकार देवी–देवताओं के साथ उनके वाहन भी मंदिर में स्थान पाते हैं। उसी प्रकार अश्व ठाकुर बब्बा के वाहन के रूप में मंदिर के नीचे स्थित है।

सीढ़ियों से होकर ऊपर जाने पर एक बड़ा मंदिर है यद्यपि अब छोटी मढ़िया का रूप एक बड़े मंदिर ने ले लिया है जिसके गर्भगृह में ठाकुर बब्बा की प्रतिमा स्थित है। प्रतिमा गेरू रंग से पुती हुई एवं दोनों ओर बड़े–बड़े पीतल के अश्व तैनात रहते हैं। चारों ओर बड़ा परिक्रमा मार्ग है इस मार्ग में भी अनेक छोटे बड़े भक्तों द्वारा चढ़ाए गए अश्व स्थित हैं। सामने बड़ा एवं खुला प्रांगण है जहाँ अगरबत्ती जलाई एवं नारियल फोड़े जाते हैं।

क्षेत्र विशेष में एवं आसपास के गांवों में इनकी प्रसिद्धि ने इस स्थान की महत्ता को बहुत बढ़ा दिया है। प्रतिदिन यहाँ बड़ी संख्या में लोग आते हैं एवं मनौतियाँ मानते हैं, पूरी होने पर अपनी श्रद्धानुसार दान करते हैं। यहाँ दुकान लगाने वाले बलराम पटैल ने भी साक्षात्कार में इसी प्रकार की ही जानकारी दी।2

प्रश्न यह है कि ये ठाकुर बब्बा आखिर कौन हैं क्या ये हनुमान हैं या अन्य कोई ? मेरा ऐसा मानना है कि इस क्षेत्र में कोई बड़े जमींदार ही ठाकुर या क्षेत्र के सरदार रहे होंगे, जो क्षेत्र की प्रजा की रक्षा का दायित्व रखते होंगे। चँकि ठाकुर अश्व पर चलते थे। इसलिए अश्व ही उनके वाहन के रूप में प्रचलित हो गया। प्रतीक रूप में उन्हें एक छोटी मढ़िया का रूप देकर देवत्व प्रदान करने के लिए सिंदूर चढ़ा दिया गया ताकि उनकी एक पृथक पहचान बन सके जो आम जन से अलग हों। ये पृथक पहचान ही उन्हें विशिष्ट स्वरूप प्रदान करती है।

प्रायः गांवों में हनुमान, खेरमाता, लाला हरदौल, दूल्हादेव, मिडोइया, घटोइया, गोंड बाबा, मंगतदेव, नागदेव इत्यादि–इत्यादि देवता पूजे जाते हैं। खेरमाता रोगों को हरकर रक्षा करती हैं, हरदौल विवाह कार्य कुशलता से सम्पन्न कराते हैं, इसी प्रकार दूल्हादेव भी विवाह एवं अन्य कार्यों में सहायक होते हैं, मिडोइया खेत की मेड़ों पर रहकर उपज को नुकसान से बचाते हैं। इसी प्रकार घटोइया नदी नालों के घाटों पर रहते हैं। नई दुल्हन नदी नाले पार करने से पहले उन्हें नारियल सुपारी चढ़ाकर आगे बढती थीं। इसी प्रकार गोंड बाबा की मानता कराके बाघ आदि के डर रक्षा की प्रार्थना करते थे।

इसी प्रकार और भी अनेक स्थानीय देवी–देवता हैं जो किसी न किसी प्रकार से अपने–अपने क्षेत्रों में पूजे जाते हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची

- रायबहादुर डॉ. हीरालाल, म.प्र. के प्रथम हिन्दी गजेटियर्स पृ. 110, 111
- बलराम पटेल से व्यक्तिगत साक्षात्कार द्वारा प्राप्त जानकारी।